The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

दलित चिन्तक स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' और भारतीय सामाजिक एवं राष्ट्रीय आंदोलन

1. **नितिन उत्तम, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, मो0-82990 89478**
2. **डॉ. ए. सेंथिल कुमार, शोधनिर्देशक, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय**

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17120340

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 19-08-2025

Published: 10-09-2025

Keywords:

रूढ़िवाद, औपनिवेशिक, वर्णव्यवस्था, सामन्तवाद, स्मृतिपरक

ABSTRACT

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन अंग्रेजों को भारत से बाहर भगाने मात्र का एकांगी आंदोलन न होकर बहुआयामी और बहुस्तरीय था जहाँ एक ओर औपनिवेशिक शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष जारी था वहीं दूसरी ओर समाज के भीतर छिपे हुए जातीय, लैंगिक, रूढ़िवादी धार्मिक और सांस्कृतिक विभाजनकारी कुरीतियों तथा शोषण के विरुद्ध आंदोलन पनप रहे थे। एक ओर शोषक विदेशी ब्रिटिश थे जिनसे मुख्य रूप से राजनीतिक सत्ता की लड़ाई थी जबकि दूसरी ओर शोषक भारतीय ही थे। भारतीय ही भारतीयों का जाति, लिंग के आधार पर हजारों वर्षों से राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक आदि स्तरों पर; कई मायनों में अंग्रेजों से भी जघन्य शोषण कर रहे थे जिसका आधार थे स्मृतिपरक, पौराणिक धार्मिक ग्रन्थ और सामन्तवादी जड़ परिवेश । महात्मा गाँधी, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, महादेव गोविंद रानाडे, स्वामी अछूतानंद हरिहर आदि आंदोलनकारी चिंतक औपनिवेशिक गुलामी के साथ ही धार्मिक सामाजिक एवं सामान्तवादी गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्षरत थे जिसमे एक सशक्त आवाज़ स्वामी अछूतानंद हरिहर की थी जिन्होंने 20वीं शताब्दी के दूसरे और तीसरे दशक में ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था तथा सामाजिक शोषण के विरुद्ध वैचारिक क्रांति की शुरुआत की।

शोध विस्तार:

स्वामी अछूतानंद हरिहर का जन्म उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद (वर्तमान अंबेडकर नगर) में एक दलित परिवार में सन 1879 ई० में हुआ था। उनका मूल नाम संतराम था। बचपन से ही सामाजिक भेदभाव के दुखद अनुभव ने उन्हें शिक्षा के प्रति प्रेरित किया। उन्होंने हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी का भली प्रकार अध्ययन किया। "उनके पूर्वज उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जनपद की तहसील छिबरामऊ में सौरिख गांव के रहने वाले थे। गाँव के हालात अछूतों के लिए बहुत खराब थे कंपनी सरकार ने जातीय भेदभाव और अस्पृश्यता के खिलाफ जो कानून बनाया था, उनको लेकर पूरे देश मे हिन्दुओ और मुसलमानों में गुस्सा भरा हुआ था यह गुस्सा एक तरफ सरकार के खिलाफ था, तो दूसरी तरफ अछूतों के भी खिलाफ था"1 स्वामी जी आरंभिक दौर में समाज सुधार संगठन आर्य समाज और स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रभावित हुए परन्तु शीघ्र ही वे आर्य समाज की कार्यप्रणाली से दुखी होकर खुले तौर पर ब्राह्मणवादी शोषणपरक व्यवस्था के विरोध में लग गए। आर्यसमाजी प्रचारक के तौर पर स्वामी अछूतानंद के प्रभाव से जाटव समाज ने अछूत कहे जाने वाले बच्चों के लिए विद्यालय भवन का निर्माण किया उसी विद्यालय के उद्घाटन के आर्य समाजी कार्यक्रम में अछूत बच्चों को जमीन पर तथा कथित सवर्ण बच्चों को टाट पर बिठाया गया था। इस भेदभाव पर क्रोधित होकर स्वामी जी ने उसी कार्यक्रम में सन 1912 कई. में आर्य समाज से इस्तीफा दे दिया। "अभी तक मैं यह समझता था कि आर्य समाज जाति भेदभाव से दूर है इसलिए मैं प्राण प्रण से आर्य समाज का प्रचारक रहा था। मैं अपने समाज को आर्य समाज से जुड़ने की प्रेरणा प्रदान करता रहा किंतु अब पता लगा कि हमारे जाति जन अंधकार में थे। इस समारोह ने हमारी आंखें खोल दीं हमारी चेतनता को झकझोर दिया कि आर्यसमाज हिंदू ही है ये हिंदू धर्म से जाने वाले दलितों को यहीं रोकने के लिए धोखाधड़ी की संस्था है। आज इसने हमको अपने पांव पर खड़ा होने के लिए नया मार्ग ढूंढने पर विवश कर दिया है। हम आज ही आर्यसमाज से त्याग पत्र देते हैं।"2

ब्रिटिश शासन व्यवस्था का काल भारतीयों के लिए मुख्यतया वंचित वर्गों के लिए बेहद द्वंद्व का काल रहा एक तरफ अंग्रेजों के आर्थिक शोषण की नीतियों का सर्वाधिक कुप्रभाव हाशिए के समाज पर ही पड़ा। अंग्रेजों ने भारतीय जमींदारों, सामंतों को कर वसूलने के अधिकार देकर क्रूरता से अधिकतम कर वसूलने के लिए प्रेरित किया। दूसरी ओर अंग्रेजी शासन व्यवस्था के राजनीतिक वातावरण में दलित, पिछड़ों, महिलाओं आदि को शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने और उनके विरुद्ध संगठनात्मक रूप से कार्य करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। स्वामी अछूतानंद से पूर्व महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले शिक्षा, जाति व्यवस्था आदि विषयों में सुधार हेतु संगठनात्मक प्रयास कर चुके थे। उत्तर भारत में उसी कार्य को आगे

बढ़ाने का कार्य स्वामी अछूतानंद द्वारा किया गया "ब्रिटिशराज के लोकतंत्र ने दलित, पिछड़ी जातियों पर हजारों साल के दबाव को हटाने में एक बड़ी भूमिका निभाई जिसके परिणामस्वरूप दलित वर्गों में एक नए नेतृत्व का उदय हुआ ऐसा ही एक नेतृत्व 20 वीं सदी में स्वामी अछूतानंद के रूप में उदय हुआ।"3

सामाजिक चेतना और आत्मसम्मान आंदोलन के जरिए स्वामी अछूतानंद ने भारतीय दलित समाज में जो सबसे बड़ी जागृति लाई वह थी आत्मसम्मान की चेतना उनका मानना था कि दलित समाज को जब तक अपने आत्मसम्मान का बोध नहीं होगा तब तक स्वतंत्रता और समानता अधूरी ही रहेगी उनका प्रसिद्ध कथन है- 'हम अछूता नहीं, अछूत बनाए गए हैं।' उन्होंने सदियों से हो रहे जातिगत भेदभाव, अपमान, आर्थिक शोषण को चुनौती प्रस्तुत की। समाज को आत्मज्ञान, शिक्षा और संगठन के माध्यम से जागृत करने का प्रयास किया। स्वामी अछूतानंद में सामाजिक चेतना चाचा मथुरा प्रसाद द्वारा सुनाए जाने वाले कबीर के दोहों से शुरू हुआ बाद में अछूतानंद कबीर पंथी साधुओ की संगति में कई स्थानों का भ्रमण भी किया। "वे लगातार 14 साल तक घुमक्कड़ी करते रहे। आश्रमों और मठों में रहते रहे, सतसंग करते और लोगों के बीच जाकर उनमे अपने ज्ञान को बांटते।"4

आर्य समाज में रहते हुए भी स्वामी जी ने शास्त्रों का गहन अध्ययन किया और जल्द ही आर्यसमाजी सवर्ण मानसिकता को भांप गए थे। "यह ईसाई और मुसलमानों के प्रहारों से ब्राह्मणवादी धर्म को बचाने के लिए गढ़ा गया वैदिक धर्म का एक ढोंग है इसकी बाते कोरी डींग और सिद्धांत ऊँटपटांग है।"5 इसी प्रकार की संस्थाओं, व्यक्तियों के साथ विचार विमर्श, विरोध, स्वीकारता ने स्वामी जी को आत्मसम्मान के लिए प्रेरित किया।

स्वामी जी ने आर्य समाज से अलग होकर 'अखिल भारतीय अछूत महासभा' की स्थापना की। उन्होंने ब्राह्मणवाद के साथ साथ आर्यसमाज के खोखले क्रियाकलापों पर भी मुखर होकर विरोध किया। आर्यसामाजीय क्रिया कलापों का खुलासा करने के लिए उन्होंने आर्य समाजी पंडित अखिलानंद से शास्त्रार्थ किया। एक सम्मेलन जिसका नाम विराट अछूत जाटों सम्मेलन था इसी सम्मेलन में दलितों के लिए 'आदि हिंदू' शब्द से संबोधन किया जिसके कई उद्देश्य थे जिसमे दलितों को अपने धर्म, इतिहास और गौरव से जोड़ना, ब्राह्मणवादी परंपरा से जकड़े समाज को मुक्त कराना, अपने धार्मिक संस्कार (जन्म, नामकरण, विवाह, मृत्यु आदि) दलित पुरोहितों से कराना।, सामाजिक एकता और संगठन के लिए सभाएं नाटक लेखन और संवाद स्थापित करना। आगे चलकर उन्होंने दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि स्थानों में भी 'आदि हिंदू सम्मेलन' का आयोजन कराया तथा कानपुर से 1925 से 1935ई. तक

'आदि हिंदू' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन तथा दिल्ली से दो वर्षों तक 'प्राचीन हिन्दू' का संपादन किया।

हिंदी दलित साहित्य की चेतना निर्माण के संदर्भ में प्रथम प्रयास किसने किया इसमे स्वामी अछूतानंद हरिहर और हीराडोम में प्रथम दलित रचनाकार कौन है इस पर विद्वानों में मतैक्य नहीं है हालांकि स्वामी अछूतानंद का रचना काल हीरा डोम जिनकी कविता 'अछूत की शिकायत' 1914ई. में सरस्वती में प्रकाशित हुई थी, इससे पहले ही शुरू हो गया था। इस पर कँवल भारती का कथन है "इसके पीछे मैनेजर पांडे जैसे रचनाकारों का यह निर्धारण है कि स्वामी अछूतानंद हरिहर का रचना काल हीराडोम से पहले ही शुरू हो गया था लेकिन कोई रचना प्रकाशित न होने के कारण वे हीराडोम से बाद के साहित्यकार ठहरते हैं।"6 यहाँ इस बात से कोई फर्क नही पड़ता कि प्रथम दलित रचनाकार कौन है। ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि स्वामी अछूतानंद आधुनिक हिंदी दलित रचनाओं के आरम्भिक महत्वपूर्ण रचनाकार हैं जिन्होंने विपुल साहित्य की रचना की। स्वतंत्रता आंदोलन के समय जैसा सामान्य लोग केवल अंग्रेजों को भारत से भगाने मात्र को उत्साहित थे। उन्हें सामाजिक परिवर्तन, समतामूलक समाज बनाने में खास लेना देना नहीं था जैसा कि महात्मा गाँधी हिंद स्वराज में केवल अंग्रेजों को बाहर भागने मात्र को उत्साहित, व्यवस्थागत परिवर्तन से अनभिज्ञ लोगों को समझाते है "इसका मानी तो यह हुआ कि आपको अंग्रेजों का राज्य तो चाहिए पर अंग्रेज नहीं चाहिये आप बाघ का स्वभाव तो चाहते हैं पर बाघ नहीं चाहते।"7

भारत के बुद्धिजीवी समाज सुधारक यह अच्छी तरह समझ गए थे कि केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन से समस्या का समाधान नहीं होगा वरन सामाजिक व्यवस्था में भी परिवर्तन जरूरी है। ऐसे माहौल में स्वामी अछूतानंद हरिहर, डॉक्टर अम्बेडकर जैसे विचारक भली भाँति जानते थे कि यदि समाज समतामूलक नहीं बन पाया तो दलित, स्त्रियों, पिछड़ों, आदिवासियों आदि समाज के वंचित वर्गों में सामाजिक ब्राह्मणवादी गुलामी के प्रति स्वतंत्रता की भावना नहीं उपजी और यदि इससे पहले ब्रिटिश भारत से चले गए तो वंचित वर्गों को समान अधिकार प्राप्त नहीं होंगे। ब्राह्मणवादी शक्तियों का उत्पीड़न कई मायनों में अंग्रेजों से बढ़कर था इसका उपाय यही था कि औपनिवेशिक सत्ता से आजादी मिलने के साथ वंचित पीड़ितों को भी आजादी मिले। स्वामी अछूतानंद इस पर चिंता व्यक्त करते हुएएक सभा में कहते हैं "भाइयों इस सभा का लक्ष्य मुल्की हकों को प्राप्त करना है हमारी मांग है कि संख्या के अनुपात से हमारे राजनीतिक अधिकार हमें दिए जाएं यह कितने दुख की बात है कि हमारे मुल्की हकों को भी द्विज भाई डकारे बैठे हैं और हमें केवल बातों में बहकाया करते हैं यही नहीं वो हमारे हकों को हमे ज्ञान भी होने नहीं देते यदि इन्हें पूर्ण स्वराज मिल जाए तो शायद मनु वाला कानून फिर चलाएंगे

और हमें सिर्फ जूठन, झटकन फटकन खाने को और उतरन ही पहनने के हकदार बनाकर रखेगे इसलिए देश के समस्त अछूत कहलाने वाले भाइयो 'आदि हिंदू' नाम से संगठित होकर अपने मुल्की हकों को हासिल करने के लिए आंदोलन करें।"8 (मैनपुरी के आर हिंदू सम्मेलन में) इसी सामाजिक चेतना को बढ़ाने के लिए स्वामी अछूतानंद ने समाचार पत्र, नाटक, भजन, कविता, गज़ल, कव्वाली आदि साहित्य की विधाओं को संवाद का आधार बनाया। इनके जीवन काल में जो रचनाएं प्रकाशित हुईं उनमें शंभूक मुनि (नाटक), रामराज्य न्याय (नाटक), मायानंद बलिदान,परखपाद, बलिछलन (अपूर्ण) शामिल है। उनकी अन्य रचनाओं में हरिहर भजनमाला, विज्ञान भजनमाला, आदि हिंदू भजनमाला भी है लेकिन ये रचनाएँ अभी उपलब्ध नहीं है।

इनकी लोकछंद में रचित एक कृति 'आदिवंश का डंका' है जो वर्तमान में उपलब्ध है। स्वामीजी एक ओर अपनी रचनाओं में दलित समाज को गौरवपूर्ण इतिहास से परिचय कराकर आत्मविश्वास जगाते हैं तो दूसरी ओर उत्पीड़न के कारणों को उजागर कर अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाने हेतु तैयार करते हैं। इतिहास बोध हेतु गज़ल-

"पुरखे हमारे थे बादशाह, वेद में भेद छिपा था, हम भी कभी थे अफजल"9
"सभ्य सबसे हिंद के प्राचीन हकदार हम
था बनाया शूद्र हमको, थे कभी सरदार हम
अब नहीं है वह ज़माना, जुल्म हरिहर मत सहो
तोड़ दो ज़ंजीर जकड़े क्यों गुलामी में रहो।"10
घोर अमानवीय जातिवादी ग्रंथ मनुस्मृति के विषय में-
"निशदिन मनुस्मृति ये हमको जला रही है।
ऊपर ना उठने देती नीचे गिरा रही है।
ब्राह्मण व क्षत्रियों को सबको बनाया अफसर
हमको पुराने उतरन पहने बता रही है।
ऐ हिंदू कौम सुन ले तेरा भला न होगा।
हम बेकसों को हरिहर गर तू रुला रही है।"11

वर्तमान में कुछ बुद्धिजीवियों द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि मनुस्मृति जैसे ग्रंथ भारत में कभी मान्यता प्राप्त सामाजिक नियामक नहीं रहे उनको स्वामी अछूतानंद इन पंक्तियों से खारिज करते हैं और स्पष्ट करते हैं कि मनुस्मृति जैसे ब्राह्मणवादी ग्रंथ समाज के अंतर्मन से गहरे बैठे हुए हैं उसी के अनुसार दलित वंचितों के प्रति व्यवहार भी प्रकट होते हैं जो आज भी जब लिखित तौर पर

लोकतांत्रिक कानून का राज़ है तब भी मूंछ रखने पर, घोड़ी चढ़ने पर, मंदिर प्रवेश आदि सामान्य कार्यों में दलितों के पीटने की घटनाएं सामने आती रहती है। "बुलंदशहर में दबंगों ने दलित पुलिसकर्मी की घुड़चढ़ी पर पथराव किया और दूल्हे को घोड़ी से नीचे गिरा दिया।" (लाइव हिंदुस्तान: 15 दिसम्बर 2024)

निष्कर्ष:

स्वामी अछूतानंद का राजनीतिक दृष्टिकोण स्पष्ट था कि स्वतंत्रता तभी सार्थक होगी जब दलित शोषित समाज को अन्य वर्गों की तरह समान अधिकार मिले कांग्रेस की जाति सुधार को लेकर निष्क्रियता का विरोध किया तथा गाँधी जी के दलितों को दिए गए हरिजन शब्द से भी असहमति ज़ाहिर की।

स्वामी अछूतानंद राष्ट्रीय और राष्ट्र से बाहर हो रही तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की राजनीति में सक्रियता दिखाते हुए 1930-32 ई. में होने वाले गोलमेज सम्मेलन में दलितों के प्रतिनिधि संबंधित महात्मा गाँधी और डॉक्टर अंबेडकर के मध्य हुए विवाद में दलितों द्वारा अंबेडकर के पक्ष में सैकड़ों टेलीग्राम भेजने का अभियान चलाया। "अछूतों के प्रतिनिधि गाँधी जी नहीं अम्बेडकर है।"12

स्वामी अछूतानंद ने सैकड़ों वर्षों से पीड़ित आशाहीन दलित समाज में स्वतंत्रता की चेतना को जगाकर राष्ट्रव्यापी आंदोलन में भागीदार बनाया। इस सामाजिक आंदोलन ने बहुसंख्यक पिछड़े समाज जो केवल विदेशी ब्रिटिश शासन से ही गुलाम नहीं था बल्कि भारतीय ब्राह्मणवाद, मनुवादी तथा सामंती व्यवस्था से गुलाम था; उस समाज को आजादी सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस सामाजिक आंदोलन ने पिछड़े, दलित मुख्यधारा की वैचारिक राजनीति से अनभिज्ञ समाज को व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदार बनाने में भूमिका निभाई।

सन्दर्भ-सूची:

1.भारती, कँवल, स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' संचयिता,स्वराज प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ 13

2.डॉ. सूरजमल, उत्तरभारत के समाज सुधारक स्वामी अछूतानंद जी, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 18

3.भारती, कवँल, स्वामी अछूतानंद हरिहर का जीवन वृत्त, फारवर्ड प्रेस,27 जनवरी 2019, पृष्ठ 3

4. भारती, कँवल, स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' संचयिता,स्वराज प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ 17

5. भारती, कवँल, स्वामी अछूतानंद हरिहर का जीवन वृत्त, फारवर्ड प्रेस,27 जनवरी 2019, पृष्ठ 7

6. वीरोदय, यशवंत, हिंदी दलित साहित्य की आधुनिक पृष्ठभूमि स्वामी अछूतानंद हरिहर एवं प्रतिरोध की विरासत,पृष्ट 296

7. गाँधी, महात्मा, हिंद स्वराज, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली,2019, पृष्ठ 19

8. डॉ. सूरजमल, उत्तरभारत के समाज सुधारक स्वामी अछूतानंद जी, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023, पृष्ठ 42

9. वीरोदय, यशवंत, हिंदी दलित साहित्य की आधुनिक पृष्ठभूमि स्वामी अछूतानंद हरिहर एवं प्रतिरोध की ,पृष्ठ 300

10. वहीं ,पृष्ट 300

11. भारती, कँवल, स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' संचयिता,स्वराज प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ 128

12. वीरोदय, यशवंत, हिंदी दलित साहित्य की आधुनिक पृष्ठभूमि स्वामी अछूतानंद हरिहर एवं प्रतिरोध की विरासत, पृष्ठ 299